

सम्पादकीय

घटती जोत, सीमित संसाधन, कम लाभ एवं बढ़ती पौष्टिक भोजन की मांग के परिपेक्ष्य में हमें अपनी खेती के स्वरूप में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। बदलते परिवेश में फसल उत्पादन के साथ-साथ इससे जुड़े अन्य घटकों, संसाधनों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर समेकित कृषि प्रणाली के रूप में, कृषि को अपनाने पर विचार करना होगा। सीमान्त कृषक जिनके पास एक एकड़ से भी कम भूमि है समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर फसल उत्पादन (धान-गेहूँ, दलहन, तिलहन एवं सब्जी) के साथ-साथ

दुग्धपालन, पिछवाड़े में मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन, दरवाजे के आसपास पोषक वाटिका+फलोत्पादन एवं वर्मी-कम्पोस्टिंग करके अपने छोटे से परिवार का सही ढंग से भरण-पोषण करते हुए अतिरिक्त आमदनी कमा सकते हैं। परिवर्तन प्रांगण में सीमान्त कृषकों के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल का प्रदर्शन किया गया है। किसान भाई इसे देखकर अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप समेकित कृषि प्रणाली की योजना बनाकर लाभान्वित हो सकते हैं। हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र किसानों को कम लागत

कृषि मूलश्र जीवनम्

में अधिक उत्पादन लेने हेतु नवीनतम सस्य तकनीको की जानकारी देने के लिए समर्पित है। इस प्रकाशन में खरीफ फसलों के उचित एवं लाभकारी उत्पादन हेतु, प्रभावी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है। आशा है कि परिवर्तन कृषि सन्देश का यह खरीफ विशेषांक कृषकों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषि से जुड़े सभी लोगों के लिए उपयोगी साबित होगा।

डॉ अमरनाथ तिवारी

परिवर्तन में कृषक जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में दिनांक 4 जनवरी, 2019 को किसान जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 61 किसानों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी को संबोधित करते हुए परिवर्तन के कृषि वैज्ञानिक डॉ ए. एन. तिवारी ने आने वाले दिनों में गहराते हुए जल संकट एवं गिरते हुए मिटटी स्वास्थ्य के प्रति किसानों को आगाह किया। मिटटी में जैविक कार्बन की मात्रा घटकर 0.3% तक हो गई है। वर्मी कम्पोस्ट, गोबर की खाद अथवा ढेंचा की हरी खाद के इस्तेमाल को बढ़ाना आवश्यक है। मिटटी जांच कराकर ही फसलों में उर्वरक डालने की मात्रा निर्धारित की जानी चाहिए। जिला कृषि पदाधिकारी श्री अशोक कुमार राव ने बताया कि सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत, प्रयोग किये जाने वाले, ड्रिप/स्प्रिंकलर सिंचाई संयंत्र के ऊपर सरकार द्वारा 90% अनुदान सुलभ है। किसान भाई इसका इस्तेमाल कर प्रति बूंद सिंचाई जल से अधिक उत्पादन ले सकते हैं। कृषि विभाग 76 कृषि यंत्रों पर किसानों को अनुदान देता है और वर्मी कम्पोस्ट के ऊपर 25000/तक अनुदान है।

किसानों को विभाग से विभिन्न यंत्रों आदि कि प्राप्ति के लिए घर बैठे ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करने को कहा गया है। किसी अधिकारी /कर्मचारी के पीछे अब दौड़ने की जरूरत नहीं है। अनुदान किसान के खाते में सीधे जाएगा। संगोष्ठी में फार्मर्स प्रोड्यूसर संघ बनाने के लिये किसानों को प्रेरित किया गया।



श्री अशोक कुमार राव, जिला कृषि अधिकारी किसानों को संबोधित करते हुए

परिवर्तन परिसर में किसान मेला का आयोजन

परिवर्तन प्रांगण में किसान मेला दिनांक 16 फरवरी, 2019 को आयोजित किया गया। क्षेत्र के लगभग 350 किसानों ने मेले का लुत्फ उठाया। जीरादेई एवं अंदर प्रखंड के कृषि अधिकारियों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं ने भी मेले में भाग लिया। भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र पूसा, नेशनल हॉर्टिकल्चर रिसर्च एंड डेवलपमेंट फेडरेशन पटना, के वैज्ञानिकों ने फसलोत्पादन की नवीनतम तकनीकों को चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया। छोटे एवं मझोले किसानों के लिए मेले का मुख्य आकर्षण फसल की कटाई हेतु छोटी कम्बाइन मशीन रही। इस कम्बाइन से धान, गेहूँ एवं सरसों की कटाई सफलतापूर्वक की जा सकती है। इससे अनाज का नुकसान, मात्र 3-

5% तक होता है जबकि बड़े कम्बाइन से 10-20% तक अनाज का नुकसान होता है। इसके अलावा मेले में जैन इंरिगेशन सिस्टम लिमिटेड पटना, ने छोटे-छोटे किसानों के लिए विशेषकर सब्जी की खेती के लिए मिनी स्प्रिंकलर का लाइव प्रदर्शन किया। न्यू बिहार नर्सरी के स्टाल पर विभिन्न प्रकार के फूलों, सजावटी पौधों, आम, लीची, नीबू, पपीता आदि के पौधों की किसानों ने खरीदारी की। विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियां -बाएर क्रोप केयर, सिंजेटा, यूनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड, पेस्टीसाइड इंडस्ट्रीज और नागार्जुन ग्रुप के प्रतिनिधियों ने अपने उन्नतशील संकर बीजों, कीटनाशकों, तथा कृषि में उपयोग किये जा रहे कृषि रसायनों को प्रदर्शित किया।



किसान मेले में कृषि मशीनों का प्रदर्शन

सीमान्त कृषकों के लिए समेकित कृषि प्रणाली

कृषक परिवारों की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर समेकित कृषि प्रणाली का एक मॉडल, परिवर्तन प्रांगण में प्रदर्शित किया गया है। 26 कट्टा उपलब्ध (लगभग सवा बीघा) क्षेत्र में एक 5 सदस्य वाले किसान परिवार के लिए वर्ष भर की आवश्यकता के अनुरूप, चावल, गेहूँ, दलहन, तिलहन, सब्जी/फल की पूर्ति हेतु यह मॉडल प्रदर्शित किया गया है। फसलों के अवशेष का उपयोग करने हेतु वर्मी कम्पोस्ट तथा मछली पालन से अतिरिक्त आमदनी हेतु भी व्यवस्था की गयी है। इस मॉडल के मुख्य घटक निम्नवत हैं-



वर्मी कम्पोस्टिंग



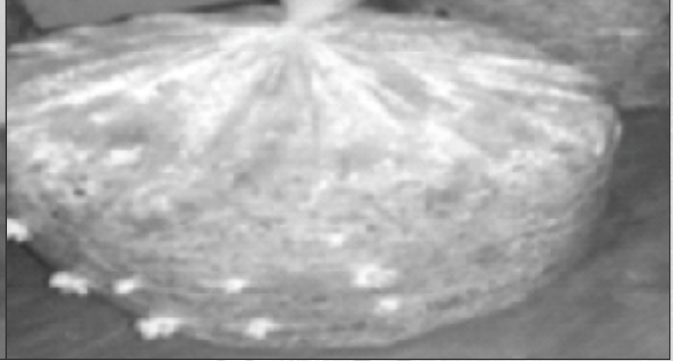
फसल उत्पादन



फल+सब्जी उत्पादन



मछली पालन



मशरूम उत्पादन

आवश्यक सूचना

- 1- परिवर्तन में जीरो टिल मशीन, रेज्ड वेड प्लान्टर, रिज प्लान्टर तथा मिटटी पलटने वाला हल उपलब्ध है। किसान भाई इसे ले जाकर अपना कार्य कर सकते हैं।
- 2- पौली हाउस में अगेती गोभी, बरसाती प्याज, संकर बैंगन, संकर टमाटर, संकर मिर्च के पौधे तैयार किये जाते हैं। किसान भाई समय से आकर इन पौधों को लेकर रोपाई संपन्न करें।
- 3- परिवर्तन किसान क्लब की सदस्यता शुल्क 100/रु वार्षिक है। शुल्क के साथ पासपोर्ट साइज का फोटो जमा कर सदस्य बनें।

सहयोगी संस्थाएं

सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फार साउथ एशिया, पटना
 भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, पूसा, समस्तीपुर
 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, रिसर्च काम्प्लेक्स, पूर्वी क्षेत्र, पटना
 कृषि एवं कृषि से जुड़े सम्बंधित विभाग, सिवान


 समेकित ग्रामीण समुदाय विकास
 नरेन्द्रपुर जीरादेई सिवान

संपर्क सूत्र-

डॉ अमरनाथ तिवारी

कृषि सलाहकार, परिवर्तन, नरेन्द्रपुर

+ 91 7759863367

amarnath@parivartanbihar.org

पोषक वाटिका लगाकर कुपोषण की समस्या से निजात पायें

गाँव के कृषक परिवारों में विशेषकर बच्चों एवं महिलाओं में कुपोषण की भयंकर समस्या है, परिवार के बच्चों तथा महिलाओं को पौष्टिक हरी सब्जी उपलब्ध कराकर हम कुछ हद तक कुपोषण की समस्या से निजात पा सकते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर परिवर्तन प्रांगण में एक पोषक वाटिका का मॉडल प्रदर्शित किया गया है। हमारे कृषक भाई, वैज्ञानिक फसल चक्र अपनाकर, अपने घर के आस-पास उपलब्ध थोड़ी जमीन में सब्जी उगाकर वर्ष भर पौष्टिक हरी-ताज़ी सब्जी का सेवन कर सकते हैं एवं बाज़ार की महंगी और जहरीले कीटनाशकों के प्रयोग के बाद उपजाई सब्जी से निजात पा सकते हैं।

रुइया ग्राम में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

गेंहू प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन, दिनांक 27 फरवरी को रुइयां ग्राम में किया गया जिसमें 35 किसानों ने भाग लिया। सभी किसानों के सामने, जीरो टिल मशीन से गेंहू की बुआई का प्रदर्शन किया गया। उपस्थित किसानों ने बगल के खेत की फसल से प्रदर्शन वाले फसल की वृद्धि तथा विकास की तुलना की तथा बिना जुताई वाले खेत में बोये गए गेहू की फसल पर संतोष जाहिर किया।

इसके पश्चात किसानों के सामने, जीरो टिल तकनीक से बोये गए गेंहू की खेती के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया। किसानों का फीडबैक लिया गया तथा उनके प्रश्नों का उचित उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट किया गया। कृषि विभाग से उपलब्ध अनुदान लेकर जीरो टिल मशीन खरीदने के लिए किसानों से आग्रह किया गया। दो किसानों ने तकनीक की सफलता से प्रेरित होकर इस मशीन को खरीदने की इच्छा जाहिर की।



मौसम वेधशाला में इवैपोमीटर यन्त्र स्थापित

परिवर्तन प्रांगण में स्थित मौसम वेधशाला में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, पुणे की तरफ से 24 अप्रैल, 2019 को श्री संदीप जी, IMD पटना द्वारा वेपोमीटर यन्त्र स्थापित किया गया। इस यन्त्र से प्रति दिन वाष्पीकरण मापा जा

सकेगा जिसके आधार पर विभिन्न फसलों में सिंचाई के उचित समय का निर्धारण हो सकेगा।



श्री संदीप जी भारतीय मौसम विज्ञान विभाग पटना इवैपोमीटर स्थापित करते हुए

मिट्टी जाँच पर किसान प्रशिक्षण का आयोजन

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र, परिवर्तन में दिनांक 27 अप्रैल को मिट्टी जाँच पर एक किसान प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें परिवर्तन कार्य क्षेत्र के 18 किसानों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में परिवर्तन के डॉ. ए. एन. तिवारी, श्री बलिन्द्र कुमार यादव एवं विज्ञानशाला के श्री सुधीर कुमार सिंह भी उपस्थित थे। डॉ. सुनील कुमार, मृदा वैज्ञानिक, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर ने किसानों को पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया तथा किसानों को खेत में ले जाकर मिट्टी का नमूना लेने के तरीके तथा इस प्रक्रिया में ध्यान रखने हेतु अन्य आवश्यक बातों को बताया,

इसके पश्चात् पूसा STFR से मिट्टी की अम्लीयता/क्षारीयता, जैविक कार्बन, उपलब्ध फॉस्फोरस एवं पोटेशियम की विश्लेषण सम्बन्धी प्रक्रियाओं को करके दिखाया। मिट्टी जाँच के उपरांत उपलब्ध तत्वों के आधार पर फसलों में फर्टिलाइजर डालने के लिए निर्धारित मात्रा ज्ञात करने की प्रक्रिया को बताया। मिट्टी जाँच के आधार पर उर्वरकों के प्रयोग करने से खेती के खर्च में कमी होगी तथा रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग करने से मिट्टी को प्रदूषित होने से बचाया जा सकेगा।



डॉ सुनील कुमार मृदा वैज्ञानिक, सबौर मिट्टी नमूना लेने का तरीका बताते हुए।

बंधू श्रीराम में मशरूम उत्पादन के लिए महिलायें उत्साहित

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के तकनीकी सहयोग से जनवरी, 2019 में बंधू श्रीराम गाँव के 9 महिला कृषकों को उनके ही गाँव में मशरूम उगाने का प्रशिक्षण दिया गया, उन महिलाओं ने सफलतापूर्वक मशरूम का उत्पादन किया। इन महिलाओं को देखकर गाँव की 22 अन्य महिलाओं ने मशरूम उगाने की इच्छा जाहिर की। उद्यान विभाग के सहयोग से मशरूम स्पान का प्रबंध कर शेष 22 महिलाओं से भी मशरूम उत्पादन कराया गया। कार्यक्रम उत्साहजनक था। इस उद्यम को महिलायें आगे बढ़ाने को उत्सुक हैं।

खरीफ में फसल उत्पादन के प्रभावी बिंदु:

प्रभेदों का चुनाव- प्रजातियों का चुनाव अपने खेत की स्थिति, सिंचाई की उपलब्धता तथा आवश्यक संसाधनों के अनुसार करना उचित होगा। कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियों का विवरण निम्नवत है-

खेत की स्थिति	प्रजातियां	पकने की अवधि (दिनों में)
उपरवार जमीन	सहभागी	115-120
	शुष्क सम्राट	115-120
	तुरंता	75-80
	प्रभात	95-100
	नरेन्द्र 97	95-100
	पी एन आर 381	110-115
मध्यम जमीन	राजेंद्र स्वेता	135-140
	सम्भा महसूरी	145-150
	MTU 1001	140-145
नीची जमीन	स्वर्णा	155-160
	राजेंद्र महसूरी 1	155-160

अरहर: लम्बी अवधि की प्रजातियां- बहार (265-275 दिन), पूसा 9 (250-260 दिन), नरेन्द्र अरहर 1(260-270 दिन), मालवीय अरहर (235-240दिन) आदि कम अवधि यानि मध्य जून से मध्य नवम्बर की प्रजातियां (150-155दिन) –UPAS-120, ICPL 88039 अरहर कटाई के बाद गेहूँ की फसल ली जा सकती है

मक्का(85-90 दिन): संकर – शक्तिमान 1 एवं शक्तिमान 2 (110-115 दिन), पूसा अगात संकर मक्का 3

उड़द (90-95 दिन): टा 9, पन्त उर्द 30, पन्त 31 पन्त 35 एवं शेखर

मूँग :पूसा विशाल (70-75 दिन), सम्राट (60-65 दिन), SML668 (65-70 दिन)

बाजरा (70-75 दिन): संकर –PHB13, 14 एवं 15, HHB146, पूसा संकर बाजरा 1201 आदि

महुआ (90-95 दिन): बी आर 708, बी एल 352 आर ए यू 3 आदि

तिल: कृष्णा (85-90दिन), प्रगति (80-85 दिन)आदि

- खरपतवार प्रबंधन – खरपतवार नाशकों का प्रयोग इस प्रकार करें-
- धान की नर्सरी में पयरोजोसल्फुरोन (साथी) की एक ग्राम दवा को दो लीटर पानी में घोल बनाकर नर्सरी में बुआई करने के 2-3 दिन बाद छिड़काव करें।
- धान की सीधी बुआई /रोपाई के 15-18 दिन के बाद नॉमिनी गोल्ड की एक मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मक्का में सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए एट्राजिन 400ग्राम+लाडिस 115 मिलिलीटर नामक खरपतवारनाशकों का 120लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के 15-20 दिन बाद खड़ी फसल में छिड़काव करने से मोथा के साथ -साथ सभी प्रकार के खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। इस पर लगभग 1300 /प्रति एकड़ के हिसाब से खर्च आता है।

- अरहर/उड़द/मूँग /बरसाती प्याज में सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए पेडीमेथेलिन की सवा लीटर मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से 400-450 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के बाद एवं जमाव से पहले छिड़काव करें, खरपतवारों का जमाव रुक जायेगा तथा फसल पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

उचित समय पर बुआई-

- वर्षा प्रारंभ होने के 15 दिन पूर्व धान की सीधी बुआई खेत में सिंचाई करके पर्याप्त नमी पर जीरो टील मशीन से करें, अथवा जून में मानसून पूर्व प्राप्त वर्षा की नमी पर बुआई संपन्न करें।
- सभी दलहनी/तिलहनी फसलो की बुआई वर्षा प्रारंभ होने के बाद जुलाई के दुसरे सप्ताह तक अवश्य सम्पन्न कर दे।
- मध्यम अवधि के धान की रोपाई मध्य जुलाई के बाद करने से प्रति दिन 12-15 किलोग्राम/एकड़ के हिसाब से उपज में कमी होती जाती है।
- प्रति इकाई उचित पौधों की संख्या –उचित उपज लेने के लिए खेत में प्रति इकाई क्षेत्र में उचित पौधों की संख्या अवश्य होनी चाहिए उदाहरण के रूप में धान के 45-50 पुंज प्रति वर्गमीटर, मक्का- के 8-10 पौध प्रति वर्ग मीटर, अरहर के 6-8 पौधे प्रति वर्गमीटर उड़द/मूँग के 33-40 पौधे प्रति वर्ग मीटर होने चाहिए।

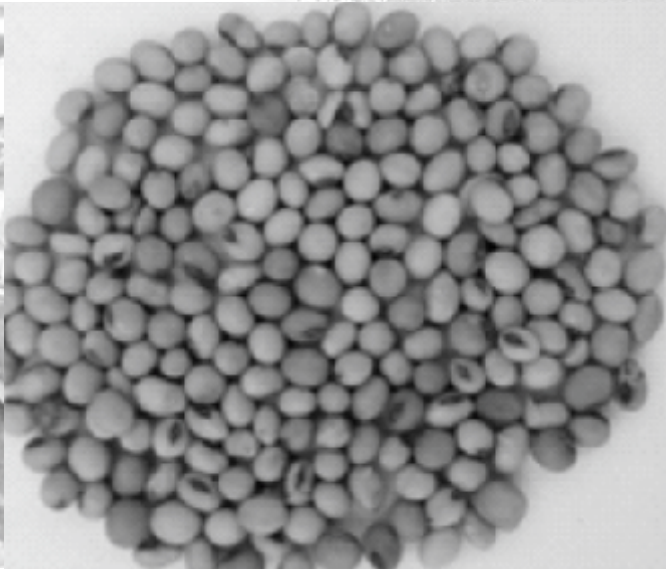
सम्बेदनशील अवस्थाओं पर नमी प्रबंधन –

- धान में किल्ले निकलते समय, गाभा निकलते समय, दाना भरते समय खेत में नमी होनी चाहिए।
- अरहर में शाखा बनते समय तथा दाना भरते समय खेत में नमी होनी चाहिए।
- मक्का में मोचा बनने से दाना भरने तक खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

धान की जगह सोयाबीन की खेती – एक लाभकारी विकल्प

सोयाबीन की खेती मुख्यतया खरीफ में की जाती है। यह धान की अपेक्षा कम पानी चाहने वाली फसल है। इसकी बुआई जून के आखिरी सप्ताह से जुलाई के मध्य तक की जा सकती है, फसल लगभग 100-110 दिन में नवम्बर माह में पक कर तैयार हो जाती है। यह एक नकदी फसल है सोयाबीन की कटाई के बाद गेहूँ की फसल सफलतापूर्वक ली जा सकती है। इसकी उपज 7-8 क्विंटल प्रति एकड़ अथवा 27-28 किलोग्राम प्रति कट्टा मिल जाता है। बाजार भाव भी 3000/-3500/रु प्रति क्विंटल मिल जाता है। इसमें 20% तेल तथा 40 % प्रोटीन पाया जाता है अतः उपरवार वाली जमीन जहाँ पानी नहीं रुकता है, वहाँ धान की अपेक्षा सोयाबीन की खेती लाभकारी विकल्प होगा। इधर 4-5 साल से धान की खेती सूखे से लगातार प्रभावित हो रही है। उपरवार वाली जमीन में जहाँ पानी नहीं रुकता है धान-गेहूँ फसल चक्र की जगह सोयाबीन

–गेहूँ फसल चक्र लाभकारी होगा। बिहार में बेगूसराय क्षेत्र में इसकी खेती बहुतायत से हो रही है। इधर पड़ोस में कुशीनगर जिले के फाजिलनगर क्षेत्र में भी इसकी खेती किसान भाई सफलतापूर्वक कर रहे हैं। इसकी बुआई वर्षा प्रारंभ होने के पश्चात जून के आखिरी अथवा जुलाई के प्रथम सप्ताह में डेढ़ फीट की दूरी पर कतार में करनी चाहिए। बुआई के बाद खरपतवारों से निजात पाने के लिए खरपतवार नाशक का प्रयोग अवश्य करना चाहिए अन्यथा खरपतवार इस फसल को दबा देते हैं। इसके लिए ईमेजथापाएर नामक रसायन को बुआई के दूसरे-तीसरे दिन बाद घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए, इससे खरपतवारों का जमाव नहीं होता है। फसल की वृद्धि अच्छी हो जाती है। परिवर्तन कार्यक्षेत्र में किसानों के खेत पर सोयाबीन का प्रदर्शन किया जा रहा है।



बरसाती प्याज की खेती के लिए नर्सरी कैसे तैयार करें

- बलुई दोमट खेत जिसमें पानी न भरता हो, उसका चुनाव करें
- एग्री फाउंड डार्क रेड प्रजाति का चुनाव करें
- 3 मीटर लम्बी एवं 60से. मी. चौड़ी उठी हुई क्यारी बनाये
- बीज की मात्रा 5-7 ग्राम प्रति वर्गमीटर अथवा 3 मीटर x 0.60मीटर क्यारी के लिए 10ग्राम बीज पर्याप्त होगा
- बुआई का उचित समय 25 जून से 10 जुलाई तक
- लगभग डेढ़ माह की पौध की अगस्त माह में रोपाई करें
- रोपाई – ऊँची उठी क्यारियों में क्रतार से क्रतार की दूरी 15 से. मी. तथा पौध से पौध की दूरी 10 से. मी. रखें
- फसल लगभग 90-100दिन में तैयार हो जाएगी

• अगात फूल गोभी की खेती करें अधिक पैसा कमायें

अगात फूल गोभी की खेती के लिए सुझाव –

- 1) सबौर अग्रिम, पटना अर्ली, पूसा कुआरी, पूसा मेघना पूसा कार्तिक संकर प्रजातियों का चुनाव करें
- 2) पौध की तैयारी के लिए बुआई मध्य जून से मध्य जुलाई तक करें
- 3) एक कट्टा गोभी रोपने के लिए 7-10 ग्राम बीज पर्याप्त होगा
- 4) रोपाई जुलाई के आखिरी अथवा अगस्त के प्रथम सप्ताह में करें
- 5) रोपाई 45से० मी० x 30से० मी० की दूरी पर करें

क्या आप जानते हैं

- यूनाइटेड नेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रति मनुष्य पेड़ों की संख्या सबसे कम यानी 28 प्रति पुरुष है जबकि चीन में 102 प्रति पुरुष, यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका में 716 प्रति पुरुष, रूस में 4461 प्रति पुरुष एवं कनाडा में 8953 पेड़ प्रति पुरुष है।
- एक किलोग्राम चावल पैदा करने के लिए 3500-4000 लीटर, एक किलो गेहूँ पैदा करने के लिए 1300 लीटर, एक टन (10 क्विंटल) गन्ना पैदा करने के लिए ढाई लाख लीटर एवं एक किलोग्राम मीट पैदा करने के लिए 15400 लीटर पानी की जरूरत पड़ती है
- भारत में 70% जल का उपयोग कृषि कार्यों में होता है
- 2020 में देश के 21 बड़े शहरों में भू-जल गायब हो जाने का अनुमान है
- खेत में पानी बर्बाद न करें, जल का दक्षता पूर्ण उपयोग करें, प्रति बूंद जल से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन लें
- अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगायें, कम पानी चाहने वाली फसलों को उगाने का प्रयास करें

संबोधन

मेरे पिता जी, श्री बलराम सिंह जी 2014 से परिवर्तन के तकनीकी सहयोग से सब्जी की खेती करते आ रहे हैं। मेरी माता जी की भी सब्जी की खेती में काफी दिलचस्पी है परिवार में खर्च ज्यादा था। परिवर्तन के विशेषज्ञों से प्रेरणा पाकर मैंने दूध पालन भी किया तथा मैंने दुग्ध उत्पादन सहयोग समिति बनाकर दुग्ध उत्पादन तथा दुग्ध विपणन में आ गया हूँ। परिवर्तन के सहयोग से सब्जी की खेती तथा दुग्ध व्यवसाय से हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ है।



रिचा राज, बर्हुलिया

मशरूम पैदा करने के लिए परिवर्तन में हमें सिखाया गया। मेरे गाँव में भी महिलाओं को जुटाकर गेहूँ के भूसे को गरम पानी में उबालकर मशरूम का बीज मिलाया गया तथा उसको पोलीथीन की थैली में बांधकर रखा गया, कुछ दिनों में मशरूम निकलने लगा। हम लोग सब्जी बनाकर खाए बहुत अच्छा लगा अब और इसको पैदा करेंगे।



शिवकली, बंथू श्रीराम

आवश्यक सूचना

- हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में मिट्टी जाँच की सुविधा उपलब्ध है। किसान भाई इसका लाभ उठाएं, मिट्टी जाँच पर खर्च इस प्रकार हैं-
- प्रति सैंपल मिट्टी जाँच खर्च (14 प्रमुख तत्वों के लिए)=250/
- सामान्य मिट्टी जाँच प्रति सैंपल (6 प्रमुख तत्वों के लिए)=65/
- सूक्ष्म तत्व -zn, Mn, B, एवं Fe =120/
- सल्फर जाँच प्रति सैंपल =30/
- परिवर्तन किसान क्लब के अंतर्गत किसान सेवा केंद्र में उन्नतशील किस्म के बीज, उर्वरक, कृषि रसायन तथा फलों-फूलों, के पौधे उपलब्ध हैं। किसान भाई इसका लाभ उठायें।
- परिवर्तन पाली हाउस में संकर बैगन, मिर्च, टमाटर एवं फूल गोभी के पौध उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।
- इसके अलावा मिट्टी पलटने वाला हल, जीरो टिल मशीन, रेज्ड बेड प्लान्टर उपलब्ध है। किसान भाई इसका फायदा उठायें।
- किसान क्लब की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 100/ है। सदस्यता शुल्क तथा एक पासपोर्ट साइज का फोटो जमाकर सदस्य बनने का कष्ट करें।

किसानों की बातें उनकी जबानी

पिछले साल हमने परिवर्तन के सहयोग से अपने खेत में 25 कट्टा में गेहूँ की बुआई जीरो टिल मशीन से की। एक सौ रूपया /कट्टा के हिसाब से जुताई बच गयी। उपज 65 किलो प्रति कट्टा मिली। हम यह कहेंगे कि मशीन से बुआई तो अच्छा होता है, लाइन में बीया गिरता है, लेकिन कहीं-कहीं छूट जाता है। तो मशीन ठीक कराकर भेजा जाये।



सुभाष पडित, बर्हुलिया हाता

मैं कमल देवी, सन्थू की रहने वाली हूँ। घर पर एक कट्टा में सब्जी की खेती परिवर्तन के लोगों की देख रेख में करती हूँ। बैगन, टमाटर, मिर्च, कोहड़ा, लौकी घेवडा की खेती करती हूँ। मुझे अच्छा लगता है घर में ताजा सब्जी मिल जाती है तथा कुछ आमदनी भी हो जाती है। मैं परिवर्तन की सभी मीटिंग में जाती हूँ तथा जो बताते हैं उस हिसाब से करती हूँ। लेकिन नील गाय से बहुत परीशान हूँ, उससे बहुत नुकसान होता है।



कमल देवी, सन्थू